eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

मंडल सिद्धांत एवं आधुनिक भू–राजनीतिक रणनीति : कौटिल्य के विदेश नीति सिद्धांतों का समकालीन वैश्विक व्यवस्था में पुनर्मूल्यांकन

दीपाली सिंह[1]
[1]शोध छात्रा, प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय प्रयागराज उ0प्र0

Received: 20 Jan 2026, Accepted: 25 Jan 2026, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2026

Abstract

प्रस्तुत शोध–पत्र में कौटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' में वर्णित 'मंडल सिद्धांत' और आधुनिक भू–राजनीतिक रणनीति के मध्य अंतर्संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। कौटिल्य का मंडल सिद्धांत प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार का एक ऐसा आधारभूत स्तंभ है, जो राज्यों के बीच शक्ति–संतुलन, गठबंधन और शत्रुता के गतिशील संबंधों को रेखांकित करता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में विशेष रूप से हिन्द–प्रशांत (Indo& Pacific) क्षेत्र में क्वाड (Quad) का उदय, भारत–चीन भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और रूस– यूक्रेन इत्यादि यह सिद्ध करता है कि कौटिल्य के सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में थे। यह शोध–पत्र मंडल सिद्धांत के मूल ढांचे, 'षाड्गुण्य नीति' और चार उपायों (साम, दाम, दण्ड, भेद) का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित करता है कि आधुनिक राष्ट्र राज्य अपनी संप्रभुता और राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कौटिल्यवादी यथार्थवाद का ही अनुसरण कर रहे हैं।

मुख्य शब्द– मंडल सिद्धांत, आधुनिक भू–राजनीतिक रणनीति, कौटिल्य, विदेश नीति सिद्धांत, समकालीन वैश्विक व्यवस्था, पुनर्मूल्यांकन

Introduction

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के इतिहास में यथार्थवाद का जनक पश्चिमी विद्वानों जैसे थ्यूसीडाइस, मेकियावली, हंस मार्गेंथाऊ को माना जाता है परंतु प्राचीन भारत में बहुत पहले ही आचार्य कौटिल्य ने यथार्थवादी राजनीति और भू– राजनीति की एक ऐसी वैज्ञानिक संरचना तैयार की थी जिसे मंडल सिद्धांत कहा जाता है। कौटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' केवल आंतरिक प्रशासन का ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह एक राज्य द्वारा अपनी सीमाओं के विस्तार, सुरक्षा और विदेशी राज्यों के साथ संबंधों के संचालन का व्यावहारिक मार्गदर्शिका है। वैसे इस सिद्धांत के आरंभिक संकेत मनुस्मृति में मिलते हैं, परंतु कौटिल्य ने इसका विस्तृत विवेचन किया है। मंडल सिद्धांत का मूल मंत्र है: "एक राज्य का निकटतम पड़ोसी स्वाभाविक रूप से उसका शत्रु होता है और शत्रु का पड़ोसी उसका मित्र होता है।" यह सिद्धांत भौगोलिक निकटता को सुरक्षा चिंताओं और रणनीतिक गठबंधनों का प्राथमिक निर्धारक मानता है। आधुनिक युग में, जहां वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और बहूपक्षीय संगठनों ने वैश्विक राजनीति का स्वरूप बदल दिया है, वहीं राज्यों की मूल प्रवृत्ति– शक्ति संचय और राष्ट्रीय हित अपरिवर्तित रही है। वर्तमान समय में, जहाँ वैश्विक राजनीति बहुध्रूवीय हो चुकी है वहाँ कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ जटिल संबंधों में इस सिद्धांत को लागू कर सकते हैं। भारत अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान से संघर्ष एवं चीन से प्रतिस्पर्धा में मंडल सिद्धांत के अरि (शत्रु) की धारणा को स्पष्ट कर सकते हैं। भारत के जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया जैसे राष्ट्रों के साथ 'शत्रु का शत्रु मित्र' की अवधारणा को स्पष्ट करता है। यह शोध

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

पत्र इस बात की छानबीन करता है कि किस प्रकार प्राचीन भारत का यह क्षेत्रीय सिद्धांत आज वैश्विक स्तर पर भू– राजनीतिक रणनीतियों को आकर दे रहा है।

कौटिल्य का मंडल सिद्धांतः सैद्धांतिक ढांचा– कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' के छठे और सातवें अधिकरण में मंडल सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या की है। मंडल का शाब्दिक अर्थ है 'वृत्त' या 'मंडली'। यह सिद्धांत इस धारणा पर आधारित है कि अंतरराष्ट्रीय संबंध और पड़ोसी राज्यों के साथ व्यवहार कैसे निर्धारित किए जाएं। इसका मूल सिद्धांत यह है कि पड़ोसी राज्य स्वाभाविक रूप से शत्रु होता है पड़ोसी का पड़ोसी मित्र होता है। मंडल में 12 राज्य होते हैं जिसके केंद्र में 'विजिगिषु' (विजय की इच्छा रखने वाला केंद्रीय राजा) होता है। विजिगिषु को न केवल शूरवीर और युद्ध में निपुण होना चाहिए बल्कि युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए उसे मित्र और शत्रु की सही–सही पहचान करके उपयुक्त गठबन्धन या सहसंबंध भी स्थापित करने चाहिए। वर्तमान समय में, चीन द्वारा भारत को घेरने की रणनीति (स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स) का मुकाबला करने के लिए भारत 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' और क्वॉड (भारत, अमेरिका,जापान, ऑस्ट्रेलिया) का उपयोग कर रहा है। यह मंडल सिद्धांत का आधुनिक कूटनीतिक विस्तार है। भारत आज के समय में सीधे तौर पर सिर्फ एक दुश्मन से नहीं लड़ रहा है बल्कि उनके पड़ोसियों को अपने पक्ष में लाने की कोशिश कर रहा है। (उदाहरण–चीन के विरुद्ध दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ जुड़ाव)। यह कौटिल्य के मंडल सिद्धांत के 'शत्रु का पड़ोसी मित्र होता है' की अवधारणा को स्पष्ट करता है।

राज्यों का वर्गीकरण – कौटिल ने विजिगिषु के सामने, पीछे और दूरस्थ क्षेत्रों के आधार पर राज्यों को विभाजित किया हैः

विजिगिषु के सम्मुख (आगे की ओर) स्थित राज्यः

1. **विजिगिषु** – केंद्रीय राज्य, जो अपनी शक्ति और साम्राज्य का विस्तार करना चाहता है।
2. **अरि** – विजिगिषु की सीमा से सटा हुआ राज्य अरि होता है। भौगोलिक निकटता के कारण यह स्वाभाविक शत्रु होता है।
3. **मित्र** – अरि की सीमा से सटा हुआ राज्य मित्र होता है। चूंकि यह शत्रु का शत्रु होता है, इसलिए विजिगिषु का स्वाभाविक मित्र होता है।
4. **अरि – मित्र** – मित्र राज्य की सीमा से सटा हुआ राज्य, जो अरि (शत्रु) का मित्र होता है।
5. **मित्र – मित्र** – अरि – मित्र की सीमा से सटा हुआ राज्य, जो विजिगिषु के मित्र का मित्र होता है।
6. **अरि – मित्र – मित्र** – यह अरि के मित्र का मित्र होता है।

विजिगिषु के पृष्ठभाग (पीछे की ओर) स्थित राज्य

7. **पार्ष्णिग्राह** – विजिगिषु की पीठ के पीछे स्थित शत्रु, जो पीठ पीछे हमला कर सकता है।
8. **आक्रांद** – पार्ष्णिग्राह के पीछे स्थित राज्य, जो विजिगिषु का मित्र होता है और पानिशग्राह को नियंत्रित रखता है।
9. **पार्ष्णिग्राहसार** – पार्ष्णिग्राह का मित्र राज्य होता है।
10. **आक्रांदसार** – आक्रांद का मित्र राज्य होता है।

तटस्थ एवं मध्यस्थ राज्य

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

11. **मध्यम** – ऐसा राजा जो विजिगिषु और अरि दोनों की सीमाओं के निकट हो। यह दोनों की सहायता करने या दोनों का मुकाबला करने में सक्षम होता है।

12. **उदासीन (तटस्थ)** – यह राज्य मंडल के अन्य सभी राज्यों से दूर और अत्यंत शक्तिशाली होता है। यह किसी के अंतरिक मामलों में तब तक हस्तक्षेप नहीं करता जब तक उसके अपने हित प्रभावित न हों।

इन 12 राज्यों में से प्रत्येक की अपनी 6 प्रकृतियाँ (अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र) होती हैं। इस प्रकार, सम्पूर्ण राजमंडल में कुल 12×6=72 प्रकृतियाँ बनती हैं। कौटिल्य के अनुसार, जिस राजा के पास इन प्रकृतियों का संतुलन और श्रेष्ठता होती है, वही वैश्विक राजनीति में अधिपत्य स्थापित करता है।

षाडगुण्य नीति एवं चार उपाय : विदेश नीति के उपकरण

मंडल सिद्धांत केवल राज्यों का वर्गीकरण नहीं है, बल्कि यह क्रियान्वयन की रणनीति भी प्रदान करता है। कौटिल्य ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों को संचालित करने के लिए छह प्रकार की षाडगुण्य नीति एवं चार उपायों का प्रतिपादन किया है। कौटिल्य ने मंडल सिद्धांत के अंतर्गत गुप्तचर एवं दूतों की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है। गुप्तचर के माध्यम से शत्रुओं की योजनाओं को जानने एवं समझने में सहायता मिलती है। मित्रों की वफादारी जानने में भी गुप्तचर एवं दूत अत्यंत लाभकारी सिद्ध होते हैं। कौटिल्य ने विजिगिषु को अपने पड़ोसी के साथ संबंधों में सतर्क रहने को एवं इसके विरुद्ध मित्रों का सहयोग लेने की बात की है।

षाडगुण्य नीति

1. **संधि** – संधि का अर्थ होता है शांति समझौतों या गठबन्धन करना।

आधुनिक भू– राजनीतिक उदाहरण– NATO] Quad

2. **विग्रह** – शत्रु के विरूद्ध कूटनीतिक या प्रत्यक्ष युद्ध की स्थिति।

आधुनिक उदाहरण – शीत युद्ध , आर्थिक प्रतिबंध (जैसे रूस पर पश्चिमी प्रतिबंध)

3. **यान** – युद्ध की तैयारी करना या सैन्य चढ़ाई करना।

आधुनिक उदाहरण – सीमाओं पर सेना की तैनाती, सैन्य अभ्यास (जैसे ' मालाबार ')।

4. **आसन** – तटस्थता या सही समय की प्रतीक्षा में शांत बैठना।

आधुनिक उदाहरण – यूक्रेन युद्ध में भारत की प्रारंभिक कूटनीतिक तटस्थता।

5. **संश्रय** – आत्मरक्षा के लिए किसी अधिक शक्तिशाली राज्य की शरण लेना।

आधुनिक उदाहरण – ताइवान का अमेरिका पर या यूक्रेन का नाटो पर निर्भर होना।

6. **द्वैधिभाव** – एक राजा से संधि और दूसरे से विग्रह की दोहरी नीति।

आधुनिक– उदाहरण – भारत द्वारा रूस से तेल खरीदना और साथ ही अमेरिका से रणनीतिक साझेदारी बढ़ाना।

चार उपाय

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

1. **साम** – कूटनीतिक वार्ता, शांति प्रस्ताव और समझाना – बुझाना।
2. **दाम** – आर्थिक सहायता, ऋण, या वित्तीय प्रलोभन (जैसे चीन की ' बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव' या ऋण – जाल कूटनीति) ।
3. **भेद** – शत्रु के सहयोगियों या उसके आंतरिक गुटों में फूट डालना (जैसे खुफिया एजेंसियों द्वारा उपद्रव भड़काना) ।
4. **दंड** – सैन्य कार्रवाई, सर्जिकल स्ट्राइक, या आर्थिक नाकेबंदी।

आधुनिक– भू– राजनीतिक सिद्धांतों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative analysis with Modern International Relation Theories)– कौटिल्य का मंडल सिद्धांत पश्चिमी अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांतों, विशेष रूप से यथार्थवाद (Realism) और नव – यथार्थवाद (Neo & Realism) के बेहद करीब है।

हंस मार्गेंथाऊ ने प्रतिपादित किया है कि राजनीति का संचालन उन वस्तुनिष्ठ नियमों द्वारा होता है जिनकी जड़े मानव स्वभाव में निहित होता है, और अंतरराष्ट्रीय राजनीति ' शक्ति के लिए संघर्ष' (struggle for power) है। कौटिल्य ने 2500 वर्ष पूर्व ही यह स्पष्ट कर दिया था कि विजिगिषु का अंतिम लक्ष्य अपनी शक्ति का विस्तार और संचय करना है।

केनेथ वाल्ट्ज का ' संरचनात्मक यथार्थवाद' अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को 'अराजक' मानता है जहाँ कोई केंद्रीय वैश्विक सरकार नहीं है। कौटिल्य का राजमंडल भी एक अराजक व्यवस्था की कल्पना करता है, जहाँ प्रत्येक राज्य अपनी सुरक्षा के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं।

आधुनिक भू – राजनीतिज्ञ निकोलस स्पाइकमैन के 'रिमलैंड सिद्धांत' और हेल्फोर्ड मैकिंडर के 'हार्टलैंड सिद्धांत' भौगोलिक स्थिति को ही शक्ति का मुख्य स्त्रोत मानते हैं। कौटिल्य का मंडल सिद्धांत पूरी तरह से भूगोल पर आधारित है। पड़ोसी राज्य 'अरि' क्यों है? क्योंकि उसकी सीमाएं आपस में टकराती हैं, जिससे संसाधनों और भूमि के लिए संघर्ष अपरिहार्य हो जाता है।

आधुनिक भू–राजनीति में मंडल सिद्धांत की प्रासंगिकता (Contemporary Relevance)– वर्तमान समय में वैश्विक व्यवस्था बहुध्रूवीय हो चुकी है। इस परिदृश्य में मंडल सिद्धांत के अनुप्रयोगों को निम्नलिखित क्षेत्रीय और वैश्विक उदाहरणों से समझा जा सकता है :

भारत–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण (The South Asian Triad) – यदि भारत को 'विजिगिषु' माना जाए, तो उसकी सीमाओं से सटे पाकिस्तान और चीन स्वाभाविक रूप से 'अरि' (शत्रु) की भूमिका में हैं। मंडल सिद्धांत के अनुसार, "शत्रु का शत्रु मित्र होता है।" यहाँ चीन और पाकिस्तान ने आपस में गठबन्धन (CPEC और रणनीतिक साझेदारी) कर भारत के खिलाफ एक पार्ष्णिग्राह जैसी स्थिति उत्पन्न कर दी है। इसके विपरीत भारत ने चीन को संतुलित करने के लिए चीन के पड़ोसी वियतनाम, जापान और फिलीपींस (जो चीन के अरि हैं) के साथ रणनीतिक और सैन्य संबंध मजबूत किए हैं। यह विशुद्ध रूप से मंडल सिद्धांत का आधुनिक प्रदर्शन है।

जापान/वियतनाम, (चीन का पड़ोसी = भारत का मित्र)

चीन, (भारत का पड़ोसी = अरि/शत्रु)

भारत, (विजिगिषु – केंद्रीय राज्य)

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

पाकिस्तान, (भारत का पड़ोसी = अरिशत्रु

➢ हिन्द–प्रशांत क्षेत्र और क्वाड (Quad & Indo& Pacific)

हिन्द – प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभुत्व (अरि) को रोकने के लिए अमेरिका, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने मिलकर 'क्वाड' (Quad) का गठन किया है। कौटिल्य की दृष्टि से, यह 'संश्रय' और समान हितों वाले मित्रों का मंडल है। यहाँ अमेरिका एक 'उदासीन' या 'मध्यस्थ' शक्ति की तरह कार्य कर रहा था, जो अब चीन को नियंत्रित करने के लिए क्षेत्रीय मित्रों (भारत,जापान) के साथ 'संधि' की निति अपना रहा है।

➢ रूस – यूक्रेन युद्ध और नाटो का विस्तार

रूस के परिप्रेक्ष्य में, नाटो का पूर्व की ओर विस्तार उसकी सीमाओं पर एक 'अरि' का निर्माण कर रहा था। यूक्रेन का नाटो की शरण (संश्रय) में जाने का प्रयास रूस के लिए पार्ष्णिग्राहसुरक्षा संकट बन गया, जिसके परिणामस्वरूप रूस ने 'दंड' (सैन्य कार्रवाई) का मार्ग चुना। वहीं, पश्चिमी देशों ने रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाकर कौटिल्य के 'विग्रह' और 'दाम' (वित्तिय चोट) के सिद्धांतों का प्रयोग किया है।

➢ साइबर स्पेस , आर्थिक युद्ध और न्यूक्लियर डिट्रेंस में कौटिल्यवादी रणनीतियाँ

आधुनिक युग में युद्ध केवल भूमि, जल और नभ तक सीमित नहीं है। अब इसमें तीन नए आयाम जुड़ चुके हैं

➢ भू–आर्थिक रणनीति (Geo&economics)

चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव' और श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह को 11 साल के पट्टे पर लेना, कौटिल्य के 'दाम' और 'भेद' नीति का आधुनिक रूप है। ऋण–जाल के माध्यम से छोटे देशों की संप्रभुता को नियंत्रित करना आधुनिक आर्थिक मंडल सिद्धांत है।

➢ साइबर और सूचना युद्ध

सोशल मीडिया के माध्यम से किसी देश के भीतर आंतरिक असंतोष पैदा करना, चुनावों को प्रभावित करना और फेक न्यूज फैलाना कौटिल्य की 'गुढ़पुरुष' और 'भेद' रणनीति का डिजिटल संस्करण है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में मनोवैज्ञानिक युद्ध और गुप्तचरों के जाल पर अत्यधिक बल दिया है, जो आज की रॉ, सीआईए और मोसाद जैसी एजेंसियों के कार्यों में परिलक्षित होता है।

➢ परमाणु निवारक

परमाणु हथियारों की उपस्थिति ने प्रत्यक्ष युद्ध की संभावना को कम किया है, जिसने देशों को 'आसन'(रणनीतिक धैर्य) और 'द्वाधिभाव' की कूटनीति अपनाने पर मजबूर किया है। शीत युद्ध के दौरान अमेरिका और सोवियत संघ के बीच की स्थिति मंडल सिद्धांत के 'आसन' और 'विग्रह' का उत्कृष्ट उदाहरण थी।

आलोचनात्मक मूल्यांकन एवं सीमा

यद्यपि मंडल सिद्धांत अत्यंत व्यावहारिक है, परंतु आधुनिक संदर्भ में इसकी कुछ सीमाएं भी हैं:

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

➢ वैश्वीकरण और अंतरनिर्भरता

कौटिल्य के समय अर्थव्यवस्थाएं आत्मनिर्भर थीं। आज राष्ट्र व्यापार, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़े हैं। चीन और अमेरिका भले ही भू–राजनीतिक शत्रु (अरि) हों, लेकिन वे आर्थिक रूप से एक–दूसरे पर अत्यधिक निर्भर हैं। विश्व व्यापार संगठन यह सुनिश्चित करता है कि वैश्विक व्यापार बिना किसी भेदभाव और निश्चित नियमों के तहत हो, जिससे 'ट्रेड वॉर'(व्यापार युद्ध) की स्थिति को रोक जा सके।

➢ अंतरराष्ट्रीय कानून और संस्थाएं

संयुक्त राष्ट्र (UN), विश्व व्यापार संगठन, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय, जैसे मंच कौटिल्य के काल में नहीं थे। आज राष्ट्र पूरी तरह से 'जंगल राज' या पूर्ण अराजकता में काम नहीं कर सकते य उन्हें वैश्विक जनमत और प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है। ये मंच देशों को युद्ध की बजाय बातचीत और कानूनी माध्यमों से विवाद सुलझाने का मंच देते हैं

➢ गैर – राज्य अभिनेता

मंडल सिद्धांत केवल संप्रभु राज्यों की बात करता है। यह अल–कायदा, आईएसआईएस, जैसे आतंकवादी संगठनों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों (डछबे) और वैश्विक गैर–सरकारी संगठनों (छळबे) की भूमिका को स्पष्ट नही करता, जो आधुनिक भू – राजनीति को गहराई से प्रभावित करता हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में 'सॉफ्ट पॉवर' की धारणा ने एक देश से दूसरे देशों के बीच सामाजिक, सांस्कृतिक,आर्थिक इत्यादि संबंधों को बढ़ावा दिया है, जिससे देशों के बीच अंतरनिर्भरता बढ़ गई है। इन संबंधों को कई गैर–राज्य अभिनेता द्वारा निष्पादित किया जाता है जो अप्रत्यक्ष रूप से देश की विदेश नीति के नीति निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष– कौटिल्य का मंडल सिद्धांत उपमहाद्वीपीय सीमाओं से परे जाकर एक शाश्वत भू–राजनीतिक सत्य को उजागर करता है। यह सोचना भ्रामक होगा कि तकनीकी प्रगति और अंतरराष्ट्रीय कानूनों ने मानव जाति की मूल प्रवृतियों को बदल दिया है। आज भी राष्ट्रों की विदेश नीति का प्राथमिक उद्देश्य आत्म–संरक्षण और शक्ति का विस्तार ही है। किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति का केंद्रीय तत्व उसका राष्ट्रीय हित होता है एवं अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के आधार पर ही वह अन्य राष्ट्रों से अपने संबंध स्थापित करता है।

हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में भारत की वर्तमान 'रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय गठबन्धन और 'पड़ोसी पहले' की नीतियां वास्तव में कौटिल्य के मंडल सिद्धांत का ही परिष्कृत और आधुनिक रूपांतरण है। इक्कीसवीं सदी की जटिल बहुध्रूवीय व्यवस्था को समझने, शक्ति–संतुलन को बनाए रखने और राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए "कौटिल्यवादी यथार्थवाद" आज भी वैश्विक रणनीतिकारों के लिए एक अमूल्य और प्रासंगिक प्रकाश–स्तंभ बना हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- कौटिल्य. (अनुवादकः वाचस्पति गैरोला). अर्थशास्त्र. चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी.
- मार्गेंथाऊ, हंस जे. (1948). पॉलिटिक्स अमंग नेशंसरू द स्ट्रगल फॉर पावर एंड पीस. न्यूयॉक अल्फ्रेड ए. नोपफ.

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

- वाल्ट्ज, केनेथ एन.(1979). थ्योरी ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिक्स. रीडिंग, एमएः एडिशन वेस्ले.
- पंत, हर्ष वी. (2019). न्यूएरा इन इंडियन फॉरन पॉलिसीः कौटिल्यन प्रिंसिपल्स इन 21ज सेंचुरी, दिल्लीः पेंगुइन बुक्स.
- सुब्रमण्यम, के. (1990). इंडिया एंड द सिक्योरिटी ऑफ द इंडियन ओशन. नई दिल्लीः आईडीएसए.
- कौशल्या, एल. एन. (1964). कौटिल्य ए क्रिटिकल स्टडी. नई दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास.
- जयशंकर, एस. (2020). द इंडिया वेः स्ट्रेजीज फॉर एन अनसर्टेन वर्ल्ड. नई दिल्ली
- सिंह, ब्रिगेडियर के. डी. (2015). कौटिल्याज मंडल थ्योरी डन मॉडर्न वारफेयर, इंडियन डिफेंस रिव्य. 30(2).
- थपलियाल, रीता. (2021). अंतरार्ष्ट्रीय संबंध और भू–राजनीति, नई दिल्लीः पियर्सन इंडिया.
- गाबा, ओ. पी. (2018). राजनीति विज्ञान के विश्वकोश नई दिल्लीः मयूर पेपर्स.
- शरण, परमात्मा. (1978). प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार और संस्थाएंरू नई दिल्लीः मीनाक्षी
- प्रकाशन.
- कौटिल्यन स्टडीज ग्रुप. (2024). ष्री–एसेसिंग द मंडालाः हाउ चाणक्या शेप्स मॉडर्न एशियन एलाइंसेजष जर्नल ऑफ एशियन सिक्योरिटी स्टडीज, 14(3), 112–135.